स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान

भारत के हर कालखंड में आदिवासियों का रहा बड़ा योगदान, स्वतंत्रता संग्राम में निभाई भूमिका : राजाराम

डूंगरपुर। मुख्य वक्ता झाबुआ के राजाराम कटारा संबोधित करते हुए।

डूंगरपुर। राष्ट्रीय जनजाति आयोग के कार्यक्रम में मौजूद समाजजन।

- **जनजाति आयोग की ओर से स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान विषयक कार्यक्रम**
- **आदिवासियों ने सिर्फ जल, जंगल, जमीन के लिए ही नहीं बल्कि राष्ट्रीयता के लिए स्वतंत्रता संग्राम किया**
- **अनुसूचित जनजाति के लोगों से संवाद कर सैंद्धातिक अधिकारों की दी जानकारी**

डूंगरपुर। राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग नई दिल्ली भारत सरकार की ओर से आजादी के अमृत महोत्सव के तहत स्वतंत्रता संग्राम में अनुसूचित जनजाति नायकों के योगदान पर गुरुवार को ऑडिटोरियम में कार्यक्रम हुआ। एसबीपी कॉलेज के संयोजक डॉ. गणेश निनामा ने बताया की कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान टैक्स बोर्ड अजमेर के सेवानिवृत सदस्य समरथलाल परमार, अध्यक्षता एसबीपी कॉलेज प्राचार्य आरबी कुमार और विशिष्ट अतिथि झाबुआ के राजाराम कटारा, राष्ट्रीय जनजाति आयोग नई दिल्ली के मुख्य वक्ता आरएस मिश्रा थे। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान से की गई। इसके बाद अतिथियों ने भगवान गणेश, वीरबाला कालीबाई कलासुआ, वीर शहीद नानाभाई खांट की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्जवलन कर शुरूआत की गई।

संयोजक एसबीपी कॉलेज डूंगरपुर के डॉ. गणेश निनामा ने कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य बताते हुए कहा की देश की आजादी में अनुसूचित जनजाति के लोगों के बलिदान और वीरगाथाओं को आगे लाना होगा। इसके अलावा पहली बार देश के अनुसूचित जनजाति क्षेत्र के लोगों से सीधे राष्ट्रीय जनजाति के लोगों से संवाद कायम करना है। ऑडिटोरियम के बाहर पूरे देश के अनुसूचित जनजाति के वीर शहीद की प्रदर्शनी लगाई गई। जिसे युवा पीढ़ी देखकर गर्व कर सके।

मुख्य अतिथि राजस्थान टैक्स बोर्ड अजमेर के सेवानिवृत सदस्य समरथलाल परमार ने कहा की आजादी में देश के आदिवासी का सबसे बड़ा योगदान रहा है। इतिहास में राहुल भांगडे सहित कई आदिवासी योद्धाओं ने 1857 की क्रांति से पहले अंग्रेजों और मुगलों से लडे है। प्रजा मंडल की स्थापना 1938 में राजस्थान में हुई थी। यह स्वतंत्रता आंदोलन वागड़ क्षेत्र में भी चला था। जिसमें बड़ी संख्या में आदिवासियों ने भाग लिया था। नानक भील ने बूंदी ने 32 साल की आयु ने आजादी की लड़ाई में शहीद हुए थे। उस समय उसकी अर्थी को गांवों में घुमाया था। इसके बलिदान पर ग्रामीणों ने नारियल दिए थे। उन्हें सिर्फ नारियल की मुखाग्नि की अग्नि पर शवदाह किया था। ऐसे में *(शेष पृष्ठ दो पर)*

दैनिक भास्कर

डूंगरपुर भास्कर 09-09

दैनिक भास्कर चीखली • ची

डूंगरपुर पहुंचे राष्ट्रीय जनजाति आयोग की टीम के प्रतिनिधि, संगोष्ठी

स्वतंत्रता आंदोलन में हमारे जनजा
साथ अंग्रेजों ने इतिहास में न्याय न

भास्कर संवाददाता|डूंगरपुर

राष्ट्रीय जनजाति आयोग और एसबीपी कॉलेज की ओर से गुरुवार को स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान विषय पर शहर के विजयाराजे सिंधिया ऑडिटोरियम में संगोष्ठी का आयोजन किया। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय जनजाति आयोग के प्रतिनिधि आरएस मिश्रा ने कहा कि जनजातीय समाज से आने वाले हमारे नायकों के साथ इतिहास में न्याय नहीं किया गया है। सिद्धू कान्हू, बुद्ध भगत, शंकर शाह, तिलका मांझी, बिरसा मुंडा, कालीबाई, सेंगाभाई, नानाभाई खांट जैसे वीरों ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी, लेकिन इतिहास में जिस तरह से उसका वर्णन किया

डूंगरपुर। स्वंत्रता संग्राम में जनजाति महानायकों के योगदान पर लगाई प्रदर्शनी को देखते जनजाति आयोग टीम के सदस्य।

उन्होंने कहा की यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर ऐसे कार्यक्रमों को करने का उद्देश्य भी यही है कि ताकि समाज को स्वतंत्रता संग्राम में

की जानकारी होना बहुत आवश्यक है। मध्य प्रदेश से आए राजाराम कटारा ने जनजाति समाज की संस्कृति और योगदान पर विचार

रहा है। स
पण्ड्या
एवम् अ
लिया।
कार्यक्रम
निनामा
समरत
जनजाति
जानकारी
के भतीजे
भाई खाट
विस्तृत
उनके द्वा
युवाओं के
ताकि सभ
हित में
कार्यक्रम
डॉ बी आ
बताया कि
दास खरा

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग
National Commission for Scheduled Tribes
श्री भोगीलाल पण्ड्या राजकीय महाविद्यालय, डूंगरपुर
स्वतंत्रता संग्राम में
जनजाति नायकों का योगदान
08 सितम्बर 2022 | राजमाता सिंधिया ऑडिटोरियम, डूंगरपुर